स्वच्छता दूत से बन गए सरपंच

मध्यप्रदेश में पिछले दिनों हुए पंचायत चुनावों में सीहोर के थूना कलां ग्राम पंचायत में 28 वर्षीय अखिलेश मेवाड़ा सरपंच निर्वाचित हुए। अखिलेश मेवाड़ा का सरपंच निर्वाचित होना पूरे इलाके के लिए आश्चर्य बन गया। उनका पहले से न तो कोई राजनीतिक अनुभव था और न ही उनके परिवार से कोई व्यक्ति पहले से राजनीति में था। चुनाव में उनके प्रतिद्वंद्वी गांव के पूर्व सरपंच एवं राजनीतिक रूप से अनुभवी लोग थे, इसके बावजूद उन्हें जीत हासिल हुई। सरपंच बनने से पहले श्री मेवाड़ा पंचायत में दो सालों से स्वच्छता दूत के रूप में कार्य कर रहे थे। स्वच्छता दूत के रूप में कार्य करते हुए ग्रामीणों के बीच उनकी गहरी पैठ बन गई और यही उनकी जीत का प्रमुख कारण बन गया। श्री मेवाड़ा कहते हैं, ''मैं चुनाव की घोषणा से पहले तक चुनाव लड़ने के पक्ष में नहीं था पर जब कुछ लोगों ने मुझे लगातार प्रेरित किया, तो मैंने उम्मीदवारी के लिए नामांकन भर दिया। चुनाव प्रचार एवं चुनाव प्रबंधन का मुझे अनुभव नहीं था, पर ग्रामीणों पर मुझे भरोसा था कि वे मुझे वोट देंगे, क्योंकि उन्होंने ही मुझे प्रेरित किया था।''

थूना कलां पंचायत राजधानी भोपाल से लगभग 40 किलोमीटर दूर है। यहां 566 परिवारों में अधिकांश पिछड़े एवं अनुसूचित समुदाय के हैं। पानी की समस्या और आबादी के लिहाज से बड़ा गांव होने के कारण थूना कलां को खुले में शौच से मुक्त कराना एक चुनौती थी। यहां के पूर्व सरपंच एवं सचिव गांव को खुले में शौच से मुक्त कराने के लिए प्रयासरत थे। इस बीच उन्हें अखिलेश मेवाड़ा का स्वच्छता दूत के रूप में साथ मिल गया और फिर सामूहिक प्रयासों की बदौलत 2013 के बाद 265 परिवारों ने शौचालय बनाकर गांव को खुले में शौच से मुक्त करा दिया। यद्यपि गांव में जल संकट बहुत ज्यादा है इसलिए सरपंच के रूप में श्री मेवाड़ा गांव में सबसे पहले पानी की व्यवस्था करना चाहते हैं, जिससे कि जल संकट दूर हो और शौचालय का उपयोग भी बेहतर तरीके से हो।

श्री मेवाड़ा ने 12वीं के बाद पढ़ाई के साथ–साथ गांव के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का काम करने लगे थे। उन्होंने लगभग 8 साल तक ट्यूशन पढ़ाया। इसकी वजह से वे बच्चों में बहुत ज्यादा लोकप्रिय हो गए। जब उन्होंने एम.कॉम. कर लिया तब उन्होंने अपना व्यवसाय बदलते हुए भोपाल में ठेकेदारी का काम शुरू कर दिया। शहरी ठेके के अलावा उन्हें पंचायत विभाग से भी कुछ काम मिले। गांव में

आंगनवाड़ी भवन एवं सड़क निर्माण का काम भी उन्होंने किया। शहर में रहने के बावजूद उनका गांव से संपर्क बना हुआ था और वे गांव के विकास कार्यों में अपने विचार पंचायत को देते रहते थे। जब सरकार ने निर्मल भारत अभियान शुरू किया तब गांव में शौचालय बनाने का काम तेज हो गया। श्री मेवाड़ा का ग्रामीण विकास में रुचि को देखकर पंचायत सचिव ने उनसे आग्रह किया कि वे गांव इस अभियान से स्वच्छता दूत बनकर जुड़ जाएं और लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने में मदद करें।

यूनिसेफ, मध्यप्रदेश के कार्यक्रम प्रबंधक श्री मनीष माथुर कहते हैं, ''समुदाय आधारित समग्र स्वच्छता एक नवाचारी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से समुदाय को प्रेरित कर खुले में शौच से गांव को पूरी तरह से मुक्त किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में समुदाय के साथ–साथ स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं स्वच्छता दूत की भूमिका महत्वपूर्ण है। स्वच्छता दूत का सरपंच जैसे महत्वपूर्ण पद के लिए निर्वाचित होना यह दर्शाता है कि उन्होंने गांव को खुले में शौच से मुक्त कराने के लिए महिलाओं एवं बच्चों के साथ–साथ पूरे गांव को अभियान से जोड़ने का प्रयास किया था। समुदाय आधारित समग्र स्वच्छता का यह एक बेहतर उदाहरण है।''

श्री मेवाड़ा याद करते हैं, ''मैं पंचायत के लिए कुछ बेहतर करना चाहता था। सचिव के उस आग्रह ने मेरी राह आसान कर दी। मैं शहर में रहने के बजाय गांव चला आया। और सबसे पहले ट्यूशन वाले बच्चों से बात की। उनकी टोलियां बनाई और स्वच्छता पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ–साथ जागरूकता रैली, शर्मिंदगी रैली और पालकों से बातचीत की। लोग तरह–तरह के बहाने बनाते थे, जिसमें पैसे नहीं है, घर में जगह नहीं है, पानी कहां से लाएंगे जैसी बातें लोग करते थे। पर महिलाओं और किशोरियों की इज्जत की बात करने पर महिलाओं ने साथ देना शुरू किया। बच्चे भी लगातार दबाव बना रहे थे। आंगनवाड़ी एवं स्कूल में भी शौचालय की स्थिति में सुधार और उसके उपयोग पर जोर दिया गया।'' श्री मेवाड़ा के साथ काम कर चुके 7वीं के छात्रा धीरज, 8वीं के छात्र विष्णु प्रजापति और 9वीं के छात्र शुभम् बताते हैं कि वे सुबह और शाम शौच वाली जगहों पर बच्चों की टोलियां बनाकर निगरानी करते थे। इसका सकारात्मक असर हुआ और फिर लोगों ने शौचालय बनाना शुरू कर दिया। कुछ लोग फिर भी आनाकानी कर रहे थे, पर गांव को खुले में शौच से मुक्ति के लिए आखिरकार उन्होंने भी शौचालय बनवा लिया।

पंचायत के तत्कालीन सचिव घनश्याम मेवाड़ा बताते हैं,

''स्वच्छता दूत के रूप में काम करते हुए अखिलेश मेवाड़ा ने गांव की अन्य समस्याओं पर भी ध्यान दिया, जिसमें गांव में मौजूद शराब की दुकान सबसे बड़ी समस्या थी। उसके कारण आए दिन गांव में विवाद होते रहते थे और महिलाओं को ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ता था। उन्होंने लगभग 150 महिलाओं को जोड़कर कलेक्टर कार्यालय में प्रदर्शन कर शराब दुकान बंद करने की मांग की। उन्हें इसमें सफलता मिली और वे गांव में ज्यादा लोकप्रिय हो गए।''

पंचायत के रोजगार सहायक संजय मालवीय बताते हैं, ''जब उन्होंने इस तरह से गांव को बेहतर बनाने के लिए काम किया, तब पंचायत चुनाव में कई लोगों ने उनसे सरपंच पद के लिए चुनाव लड़ने को कहा। उनकी जीत के बाद लोगों को उम्मीद है कि पंचायत में तेज गति से विकास होगा।'' श्री मेवाड़ा ने पहले पंचायत चुनाव लड़ने से मना किया था पर परिवार के सहयोग और कुछ ग्रामीणों के आग्रह के बाद उन्होंने विचार किया कि सरपंच बनकर गांव काम बेहतर तरीके से कर सकते हैं।

श्री मेवाड़ा कहते हैं, ''सरपंच बनने के बाद लग रहा है कि गांव के लोगों ने मुझे बड़ी जिम्मेदारी दी है और पहले से ज्यादा काम मुझे करना पड़ेगा। मैं सबसे पहले गांव में रुकी हुई नल–जल योजना को शुरू करवाऊंगा। पानी का प्रबंध हो जाने के बाद गांव में सूखे और गीले कचरे का प्रबंधन करने पर ध्यान देना है, जिससे कि गांव में कहीं भी गंदगी दिखाई नहीं दे। मैं गांव की शालाओं और आंगनवाड़ी पर भी ज्यादा ध्यान दूंगा, क्योंकि मैं अपने को बच्चों से जुड़ा हुआ महसूस करता हूं।'' स्वच्छता दूत से सरपंच बने श्री मेवाड़ा थून कलां के सबसे युवा सरपंच हैं और ग्रामीणों को उम्मीद है कि अगले 5 सालों में थूना कलां एक आदर्श पंचायत बन जाएगा।

****

स्त्रोत : यूनीसेफ, भोपाल